

1971

war

चरण 1

युद्ध से पहले की परिस्थितियाँ (1947 - 1971)

1971 का युद्ध कोई आकस्मिक घटना नहीं थी, बल्कि यह दशकों से पश्चिमी और पूर्वी पाकिस्तान के बीच पनप रहे गहरे राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक मतभेदों का परिणाम था। युद्ध की ये जड़ें 14 अगस्त 1947 को भारत के विभाजन के साथ ही बो दी गई थीं, जब धर्म के आधार पर एक ऐसा राष्ट्र बनाया गया था जिसके दो हिस्से 1600 किलोमीटर दूर थे और उनके बीच एक बड़ा देश (भारत) मौजूद था।

दो भूभाग, एक राष्ट्र: भौगोलिक और सांस्कृतिक विसंगति

पाकिस्तान का निर्माण एक भौगोलिक अजूबा था। एक तरफ पश्चिमी पाकिस्तान था, जो आज का पाकिस्तान है, और दूसरी तरफ पूर्वी पाकिस्तान था, जो अब बांग्लादेश है। इन दोनों हिस्सों में कोई भी भौगोलिक या भाषाई समानता नहीं थी।

* पूर्वी पाकिस्तान: यहाँ की आबादी मुख्य रूप से बंगाली थी। उनकी भाषा बंगाली थी और उनकी संस्कृति, भोजन, संगीत और साहित्य का एक समृद्ध इतिहास था। यह एक उपजाऊ, नदी-आधारित डेल्टा क्षेत्र था, जहाँ मानसून का मौसम और बाढ़ आम थी।

* पश्चिमी पाकिस्तान: इस हिस्से में पंजाबी, सिंधी, पश्तून और बलूच जैसी विभिन्न जातीय समूह रहते थे, जिनकी भाषाएँ और सांस्कृतिक पहचान अलग थीं। यह इलाका अधिकतर शुष्क, अर्ध-रेगिस्तानी था।

इन दोनों हिस्सों को जोड़ने वाला एकमात्र बंधन इस्लाम धर्म था, लेकिन धर्म के नाम पर की गई यह एकता, दशकों के शोषण और भेदभाव को झेल नहीं पाई।



राजनीतिक और आर्थिक असमानता: सत्ता का केंद्रीकरण

विभाजन के तुरंत बाद से ही, पाकिस्तान की राजनीति, सेना और प्रशासन में पश्चिमी पाकिस्तान का वर्चस्व स्थापित हो गया। पूर्वी पाकिस्तान की आबादी ज़्यादा होने के बावजूद, उन्हें सत्ता में बहुत कम हिस्सेदारी मिली। इस असमानता ने पूर्वी पाकिस्तान के लोगों में गहरा असंतोष पैदा किया और उन्हें यह महसूस होने लगा कि वे पश्चिमी पाकिस्तान के एक उपनिवेश बन गए हैं।

* आर्थिक शोषण: पूर्वी पाकिस्तान एक प्रमुख कृषि क्षेत्र था, खासकर जूट और चाय के उत्पादन के लिए। जूट का निर्यात पाकिस्तान के लिए सबसे ज़्यादा विदेशी मुद्रा कमाता था, लेकिन इस कमाई का बड़ा हिस्सा पूर्वी पाकिस्तान के विकास पर खर्च करने के बजाय पश्चिमी पाकिस्तान में उद्योग, सैन्य खर्च और बुनियादी ढांचे के विकास पर लगाया जाता था। पूर्वी पाकिस्तान में कल-कारखाने बहुत कम थे, जिससे वहाँ रोज़गार के अवसर सीमित थे और गरीबी बढ़ती जा रही थी।

* विकास में भेदभाव: सार्वजनिक खर्च, शिक्षा, स्वास्थ्य और बुनियादी ढाँचे (जैसे सड़कें, बंदरगाह और बिजली) के मामले में भी पूर्वी पाकिस्तान को लगातार नज़रअंदाज़ किया गया। इससे वहाँ के लोगों में यह धारणा मजबूत हो गई कि उनकी कमाई से पश्चिमी पाकिस्तान समृद्ध हो रहा है, जबकि उन्हें अपनी ही मेहनत के फल से वंचित रखा जा रहा है।

सांस्कृतिक मतभेद: बंगाली पहचान की लड़ाई

यह संघर्ष सिर्फ आर्थिक और राजनीतिक नहीं था, बल्कि सांस्कृतिक भी था। पश्चिमी पाकिस्तान के शासक बंगाली संस्कृति को हीन मानते थे और उसे दबाने की कोशिश करते थे।

* भाषा आंदोलन (1952): 1952 में, पाकिस्तान सरकार ने उर्दू को एकमात्र राष्ट्रभाषा बनाने का फैसला किया। पूर्वी पाकिस्तान के लोगों ने इसे अपनी भाषाई पहचान पर सीधा हमला माना। इस फैसले के विरोध में ढाका में बड़े पैमाने पर विरोध प्रदर्शन हुए, जिन पर पुलिस ने गोली चलाई, जिसमें कई छात्र मारे गए। यह घटना बंगाली राष्ट्रवाद की नींव बन गई और आज भी 21 फरवरी को बांग्लादेश में 'भाषा शहीद दिवस' के रूप में मनाया जाता है।

1970 के चुनाव और राजनीतिक संकट: जनमत का अपमान

दशकों के इस असंतोष का विस्फोट 1970 के आम चुनावों में हुआ। ये पाकिस्तान के इतिहास के पहले निष्पक्ष चुनाव थे।

* अवामी लीग की जीत: शेख मुजीबुर रहमान के नेतृत्व वाली अवामी लीग ने पूर्वी पाकिस्तान की 169 में से 167 सीटें जीतकर संसद में स्पष्ट बहुमत हासिल किया। इस जीत ने उन्हें पूरे पाकिस्तान की सरकार बनाने का संवैधानिक अधिकार दिया।

* सैन्य और राजनीतिक साज़िश: हालाँकि, पश्चिमी पाकिस्तान के सैन्य शासक जनरल याहया खान और पाकिस्तान पीपल्स पार्टी के नेता जुल्फिकार अली भुट्टो ने अवामी लीग को सत्ता सौंपने से इनकार कर दिया। उन्होंने विभिन्न बहाने बनाकर संसद का सत्र टाल दिया, जिससे पूर्वी पाकिस्तान में गुस्सा और बढ़ गया। शेख मुजीबुर रहमान ने असहयोग आंदोलन का आह्वान किया, जिससे पूर्वी पाकिस्तान में सरकार का कामकाज लगभग ठप हो गया।

'ऑपरेशन सर्चलाइट' और शरणार्थी संकट: नरसंहार की शुरुआत

जब राजनीतिक बातचीत विफल हो गई, तो पाकिस्तानी सेना ने पूर्वी पाकिस्तान के लोगों के विरोध को कुचलने के लिए एक क्रूर सैन्य अभियान, 'ऑपरेशन सर्चलाइट' शुरू किया। यह अभियान 25 मार्च 1971 की रात को शुरू हुआ और इसका उद्देश्य बंगाली राष्ट्रवाद को जड़ से खत्म करना था।

* नरसंहार और बर्बरता: पाकिस्तानी सेना ने योजनाबद्ध तरीके से बंगाली नागरिकों, बुद्धिजीवियों, छात्रों और हिंदू अल्पसंख्यकों को निशाना बनाया। ढाका विश्वविद्यालय में सैकड़ों छात्रों और शिक्षकों को बेरहमी से मार दिया गया। बड़े पैमाने पर बलात्कार, हत्याएं और आगजनी की घटनाएँ हुईं। इस नरसंहार को इतिहास के सबसे क्रूरतम नरसंहारों में से एक माना जाता है।

* शरणार्थी संकट: इस नरसंहार से बचने के लिए, लाखों लोग भारत की ओर भागे। अगले कुछ महीनों में, लगभग 1 करोड़ शरणार्थी भारत आ गए, जिससे पश्चिम बंगाल, त्रिपुरा, मेघालय और असम जैसे राज्यों में एक बड़ा मानवीय और आर्थिक संकट पैदा हो गया। भारत की सरकार पर इन शरणार्थियों को खिलाने, रहने और चिकित्सा सुविधा देने का भारी बोझ आ गया था।

भारत के लिए यह सिर्फ एक पड़ोसी देश का आंतरिक मामला नहीं रहा था। शरणार्थी संकट ने भारत की आर्थिक और सामाजिक व्यवस्था पर भारी दबाव डाल दिया था। प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने महसूस किया कि इस समस्या का एकमात्र स्थायी समाधान पूर्वी पाकिस्तान की स्वतंत्रता है। उन्होंने दुनिया भर के नेताओं से इस नरसंहार को रोकने का आग्रह किया, लेकिन ज़्यादातर देशों ने इसे पाकिस्तान का "आंतरिक मामला" कहकर टाल दिया। जब

राजनयिक प्रयास विफल हो गए, तो भारत ने 'मुक्ति वाहिनी' को सैन्य सहायता देना शुरू कर दिया। इस प्रकार, युद्ध की चिंगारी भड़कने के लिए सभी परिस्थितियाँ तैयार थीं, और पाकिस्तानी वायु सेना के 3 दिसंबर के हमले ने सिर्फ इस आग में घी डालने का काम किया।